Volume-08
Issue-01
January-2021

ISSN: 2349-7637 (Online)
RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
https://rhimrj.co.in/ [Peer-Reviewed Journal]

यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' के उपन्यास 'ढोलन कुंजकली' में निहित संवेदना

डॉ. श्रुति शर्मा

सह आचार्य, हिंदी विभाग, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 January 2021

Keywords
संवेदना, शोषण, सामंती संस्कृति, पितृसत्तात्मक व्यवस्था, जाति व्यवस्था।

ABSTRACT

'ढोलन कुंजकली' उपन्यास दलित स्त्री केन्द्रित प्रथम उपन्यास है जिसमें दलित नायिका कुंजकली के आधार पर उपन्यास का शीर्षक निर्धारित किया गया है। उपन्यास में दिखाया गया है, कि सामंती संस्कृति में वर्चस्ववादी व्यक्ति प्रायः अपने वर्चस्व को बनाए रखने के लिए गरीब एवं दलित व्यक्ति का शोषण करता है। उसके शोषण का भय लोगों में इस तरह से व्याप्त होता है कि उसके शोषण की राजनीतिक जड़ें ध्वस्त हो जाने के पश्चात् भी आम आदमी अपना संतुलन नहीं बना पाता है। 'ढोलन कुंजकली' उपन्यास में दलित वर्ग की दयनीय स्थिति को सामन्तकालीन परिदृश्य में अभिव्यक्त किया गया है। इस उपन्यास में एक तरफ ढोली जाति का चित्रण किया गया है, तो दूसरी तरफ सामन्तवादी शोषण व्यवस्था का पर्दाफाश किया गया है।

राजस्थान की गायक ढोली जाति के जीवन को नायिका 'ढोलन कुंजकली' के माध्यम से सामंतकाल में स्त्री की दशा को प्रस्तुत किया गया है। 'ढोलन कुंजकली' के माध्यम से ढोली जाति के परिवेश, उसकी मानसिकता को अभिव्यक्त किया गया है। साथ ही सामन्ती समाज की क्रूरताओं और शोषण को भी दिखाया गया है। लगातार शोषण के कारण दलित वर्ग की स्थिति बद से बदतर हो गई थी। यह समाज घुटन भरी जिन्दगी जीने के लिए अभिशप्त हो गया था। इनके घरों में आवश्यकता से भी कम साधन होते थे। घरों की स्थिति भी जर्जर थी। लेखक रूपाली के घर की स्थिति का वर्णन करते हैं–"रूपाली का घर कच्चा था। दीवारें तो पत्थर पर पत्थर रखकर ही बनाई हुई थीं। आंगन में राती मिट्टी लीप दो गई थी। कमरों के नाम पर एक साल, एक ओटा और एक रसोई थे। साल में उसका पति हीरू सोता था। हीरू की खाट 'आक' के पेड़ के रेशे की सुतलों से बनी हुई थी। खाट के बराबर दीवार में कई सूराख थे जिनमें से हवा फर्र–फर्र की ध्वनि करती हुई आती रहती थी। आंगन में एक दीवार ऐसी भी थी जिस पर तरह–तरह के मांडणे बनाए हुए थे। यह रंगोली ग्रामीण चित्रकारी की प्रतीक थी। उनमें रामदेवजी का चित्र भी प्रमुख था।"[1] दूसरी ओर अगर सामन्ती राजाओं का रहन–सहन देखें तो देखकर आश्चर्य होता है कि पीड़ित गरीब वर्ग का शोषण कर आलीशान महलों में रहने में इन्हें जरा सी भी ग्लानि का अनुभव नहीं होता है। यह सब सामन्ती वातावरण की विसंगतियाँ थीं। इनके आलिशान सामन्ती महलों का चित्रण लेखक ने इस प्रकार किया है–"फतहगढ़ में ज्यादा कमरे नहीं थे। एक शीशमहल था और शेष छोटे–छोटे महल। शीशमहल में जाजम बिछ गई थी। जाजम के आगे ईरानी गलीचा। उस गलीचे के बेल–बूटों में दो नग्न औरतें दो राजाओं को शराब पिला रही थीं। छत से झाड़–फानूस लटक रहे थे जिनमें मोटी–मोटी मोमबत्तियाँ जल रही थीं। जाजम के चारों ओर चाँदी के दीपदानों पर चीन की बनी हुई शीशेवाली बड़ी–बड़ी चिमनियाँ जल रही थीं। अत्यन्त ही तेज़ प्रकाश था जिसमें सूई आसानी से पिरोई जा सकती थीं।"[2] सामन्ती समाज ने उन्हें सुख की साँस कभी लेने ही नहीं दी। सामन्त वर्ग इन्हें इनकी इज्जत आबरु और स्वाभिमान से बेदखल रखता था। इनके द्वारा किया जाने वाला आर्थिक शोषण पराकाष्ठा पर पहुँच गया था।

सामन्ती व्यवस्था के अन्तर्गत दास प्रथा, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, बहु विवाह, वेश्यावृत्ति, पारिवारिक विघटन, अस्पृश्यता की समस्या तथा वर्ग भावना तत्कालीन समाज की प्रमुख समस्याएँ थीं। इन समस्याओं के सच्चे झूठे इल्ज़ामों से स्वयं की निर्दोषिता साबित करने तक का अधिकार दासों के पास नहीं होता था। इनकी बडी दयनीय स्थिति थी। इन पर होने वाले अमानुषिक अत्याचारों के खिलाफ कोई आवाज उठाने वाला नहीं था। प्रेम की बातें करने पर इनको मार पड़ती थी और झूठे आरोप लगाकर उन्हें कारागार में बन्द कर दिया जाता था। कुंजकली के साथ भी यही होता है। ठाकुर गोपीसिंह कुंजकली के द्वारा उसके सामने निर्वस्त्र नृत्य नहीं करने पर उसको जबरन विवश करने के लिए उसके पति गुलबिया को चोरी के झूठे आरोप में पकड़वा देता है।

आर्थिक तंगी के कारण गरीब ढोलनों को ठाकुरों के यहाँ नाचना गाना पड़ता था। अच्छे खान–पान की लालसा भी इनमें व्याप्त होती थी। चांदकी, ठाकुर भूपति सिंह के यहाँ खाये गये खाने के बारे में नयन मटकाकर कहती है, "असली दांखा (किसमिस) का दारू था। हिरन का मांस भी बना था। छककर दारू पिया और जम के माँस खाया।" रूपाली ने दुख–भरे स्वर में कहा, "और जम के अपने शरीर को कुटवाया होगा।"[3] तब चांदकी का यह कहना कि, "डील का क्या

घिसता है। वह भी गरीब के डील का।"[4] एक गहरे क्षोभ की स्थिति उत्पन्न कर देता है। स्वयं के शरीर पर भी स्वयं का अधिकार न होना मानवता पर प्रश्न चिह्न खड़ा कर देता है। इस उपन्यास के आधार पर कहा जा सकता है कि सामन्ती भेड़िये जगह–जगह दलित स्त्री को नोंचने के लिए आतुर बैठे रहते हैं। ठाकुर शिवपतसिंह द्वारा रूपाली को देखकर लार टपकाना और उसे किसी भी तरह पाने की लालसा सामन्ती भेड़ियेपन की श्रेणी में ही आता है। वह रूपाली को पाने के लिए उसके प्रेमी जैतसिंह को मौत के घाट उतार देता है। शिवपत ने मौका देखकर रूपाली को हथियाना चाहा उससे कहा कि वो उसे रानी बनाकर रखेगा तब रूपाली उसे कड़वा सच बोलते हुए कहती है–"ठाकुर सा! नंगी क्या छुपाए और क्या दिखाए। पर मैं आपके सारे 'गाभे' (वस्त्र) उतार दूँगी। ठाकुर शिवपत का नागा होना बड़ा हो मतलब रखता है। आप कितने ही स्वांग रचें... आप कितने ही उणियारे (चेहरे) लगाएँ पर मैं आपका असली उणियारा जानती हूँ।"[5] उस दिन के बाद से शिवपतसिंह रूपाली को परेशान करना छोड़ दिया था। वह ऐसा समय था कि अगर कोई व्यक्ति ठाकुर सामंत या ठाकुर के खिलाफ आवाज उठाने की कोशिश भी करता तो उसकी बोटी–बोटी नोच ली जाती थी। उसको जिन्दा जमीन में गड़वा दिया जाता था। लेकिन ढोलन रूपाली को इन सब चीजों का डर नहीं था।

दलित की स्थिति बड़ी अजीब है उसकी गलती नहीं होने पर भी गलती का भुगतान उसे ही करना पड़ता है। रावतिया के साथ भी यही हुआ। रावतिया नौटंकी में काम करता था। उसकी नौटंकी आस–पास के 10–12 गाँवों में प्रसिद्ध थी। वह ठाकुर बनवारीसिंह के यहाँ अमरसिंह की नौटंकी करने गया था। वहाँ रूपाली का बाप गोपिया हाड़ी रानी बना और रावतिया अमरसिंह। ठाकुर के डेरे की जनानी ड्योढ़ी से उसकी बड़ी बेटी अणंदकुँवर एवं अन्य स्त्रियाँ इस आयोजन को देख रही थीं। अणंदकुँवर नौटंकी में होने वाली रावतिया की भाव–भंगिमा और उसके गठीले शरीर को देखकर कहती है–"कितना बांका मोत्यार है? ढोली के घर जन्म लेकर भी यह राजा–ठाकुरों के कुँवरों–सा लगता है।"[6] ठाकुर की बेटी अणंदकुँवर रावतिया पर मोहित हो गई थी। वह अन्धेरे में अपनी बूढ़ी डावड़ी जखिया के साथ उससे मिलकर उसे अपने गले की सोने की चेन पुरस्कार में देती है, और दूसरे दिन भी मिलने के लिए बुलाती है। दूसरे दिन वह रावतिया से प्रणय याचना करती है। वह चौंत्तीस साल की काली–कलूटी–चेचक के दाग से भरे चेहरे वाली युवती है। कुरुप होने से वह अविवाहित है। अणंदकुँवर से मिलकर रावतिया डर गया क्योंकि 'ठाकुर की बेटी है वह।' उसने मन–ही–मन इस वाक्य को दोहराया और यह एक अनजानी दहशत से घिर गया कि कहीं ठाकुर को मालूम पड़ गया तो ज़मीन में गड़वा देंगे। लेकिन इसमें उसका क्या कसूर है ? उसने खुद ही तो बुलाया है। खुद ही बख्शीश दी है। मैंने तो किसी तरह की पहल नहीं की। फिर भी कसूर मेरा ही माना जाएगा। इस धरती पर कोई कसूरवार है तो गरीब...छोटी जात वाला... ढोली–चमार–नाई–धोबी–नायक बाबरिया... उसने कई जातियों को याद कर लिया।"[7] उसकी विवशता यह थी कि वह दलित वर्ग से था। भले ही अणंदकुँवर मिलने आयी थी फिर भी आरोपी तो वही ठहराया जाएगा। वह द्वन्द्व की स्थिति में घिरा हुआ था अगर यह नहीं जाता है तो अणंदकुँवर उस पर चौन चोरी होने का इल्ज़ाम भी लगवा सकती है। दूसरे दिन रावतिया डरते हुए अणंदकुँवर के बुलावे पर जाता तो है लेकिन हल्का उजाला होने पर वह डर जाता है। "रावतिया के मन में ठंड घुस रही थी। यदि किसी ने देख लिया तो उसको जिंदा नहीं छोड़ेंगे। ...उसे गंडक की मौत मार देंगे। उसे अपनी दीनता याद आती रही। उसे ठाकुर का आतंक दबोचता रहा। इसी ऊहापोह में रावतिया उठा और थूक मुट्ठी में भागा।"[8] उसे भागता देख और अंणदकुँवर को प्रणय याचना करता देख वहाँ ड्योढ़ीदार गुमानसिंह प्रकट हुआ। वह रावतिया को अपराधी जानकर उसे मोटी मजबूत लाठी से मारता है। मार से उसकी दोनों टाँगें टूट गई। निरपराध ही टाँगें टूट जाने से उसकी जीविका का साधन भी बन्द हो गया। वह दूसरों के टुकड़ों पर पलने लगा उसकी नौटंकी मंडली भी बिखर गई।

सामाजिक जाति व्यवस्था के कारण वर्चस्ववादी व्यक्ति ही नहीं छोटे बच्चे भी इस व्यवस्था के विपरीत जाने से डरते हैं। कुंजड़ी हड़मान के साथ न खेलकर उसकी बहन पद्मण के साथ खेलती थी। पद्मण के मन में डर बैठाकर हड़मान कुंजकली को अपने साथ खेलने के लिए सहमत कर लेता था। कुंजकली के रूप रंग को देखकर हड़मान कहता है–"कुंजडी! तू कित्ती चोखी और फूटरी है। मेरा जी तो चाहता है कि मैं तुझे सांचौली अपनी बहू बना लूँ।"[9] तब कुंजड़ी उसको झिड़कते हुए कहती है–"हड़मान! तेरी तो खोपड़ी खराब है। कहाँ मैं ढोलण और कहाँ तू बामण! 'मतिमारिए' को जात से बाहर कर देंगे। आगे से कोई बामण तेरे साथ खाएगा–पीएगा नहीं... तेरे घरवाले भी तो तेरे साथ नहीं जीमेंगे।"[10] इससे स्पष्ट होता है कि राजस्थानी सामन्तवादी वातावरण में लड़का या लकड़ी जिस उम्र में स्वयं को ठीक तरह से समझ भी नहीं पाते हैं उस उम्र में वे जाति व्यवस्था को उसकी सारी अच्छाइयों–बुराइयों और सीमाओं के साथ जानने समझने लग जाते हैं। व्यवस्थागत कठोर नीतियाँ उसे यह सब जानने समझने को विवश भी करती है ताकि अनजाने में भी उनसे जाति व्यवस्था विरोधी कोई गलती न हो जाये।

बहु–विवाह प्रथा भी सामन्ती व्यवस्था का अभिन्न अंग थी। ये संवेदनहीन सामन्त पुरुषत्व के बल पर किसी भी गरीब दलित व्यक्ति के कमजोरी का फायदा उठाकर उसकी बहू बेटी को उठवा लेते थे। फतहसिंह की कई रानियों, पटरानियाँ थीं लेकिन फिर भी अपनी कामवासना की तृप्ति के लिए अपने से कई वर्ष छोटी कुंजकली को वह अपने अधिकार में रखता है।

ठाकुर गोपीसिंह की भी कई पत्नियाँ हैं फिर भी जगह–जगह मुँह मारने की उसकी आदत जाती नहीं है। सामन्ती वर्ग में जहाँ एक राजा या ठाकुर कई स्त्रियों का स्वामी होता था वहीं सामन्ती व्यवस्था के उच्च वर्ग में जन्मी स्त्री अगर कुरूप हो तो उसकी जिन्दगी नरक से भी बदतर बन जाती थी। उसे चार दिवारी के भीतर पराये पुरुष की छाया से भी दूर होकर जीवन व्यतीत करना पड़ता था। जहाँ तक राजनीतिक षड्यंत्रों और कुचक्रों का प्रश्न है, ये सामन्त लोग सत्ता प्राप्ति के लिए अपने पिता तक को विष देने से नहीं चूकते थे। 'ढोलन कुंजकली' उपन्यास में दिखाया गया है कि राजनीतिक लाभ के लिए ठाकुर अपनी सारी पत्नियों को छोड़ने के लिए तैयार हो जाता है, राजा फतहसिंह अपने ही द्वारा पड़दायतण बनायी गई कुंजकली को दूसरों के सामने नाचने पर मजबूर करता है। राजनीतिक षड्यंत्र में कुंजकली भी साझेदारी निभाती है। वह कामदार जेठमल वर्मा से मिलकर अपने रास्ते से दीवान को हटवा देती है।

उपन्यास में माइकेल नामक अंग्रेज एजेंट पात्र का भी चित्रण हुआ है। वह राजस्थानी सामन्तों की सूचनाओं को अंग्रेजों तक पहुँचाता है। उपन्यास में भी वह राजा फतहसिंह का विश्वासपात्र बनकर राजस्थानी रियासतों की जानकारी अपने अधिकारियों को प्रेषित करता है। इसके चरित्र में अंग्रेजी शासकों की बुरी नीति, 'कूटनीति और भेदभाव कराकर सत्ता ग्रहण करने की प्रवृत्तियों' का आभास मिलता है। उपन्यास में 'चन्द्र' जी ने दलित वर्ग के रंग के साथ देशभक्ति का रंग भी उनकी सामाजिक, आर्थिक स्थिति के संग मिला दिया है जो उपन्यास को एक अलग ही रंग दे देता है। उपन्यास में देवोदास बाबा क्रांतिकारी विचारधारा से ओतप्रोत है। वह हनुमान मंदिर में पुजारी का वेश बनाकर रहता है। कुंजकली हनुमान की भक्त थी इसलिए मंदिर में उसकी भेंट देवोदास बाबा से हो जाती है। वह उसे प्रायः सामाजिक समानता की बात कहता था। कुंजकली के द्वारा सामाजिक असमानता को 'रीत' के रूप में अभिव्यक्त करने पर वह कहता है–"अरे, इस रीत को तोड़ने के लिए ही तो भगतसिंह और चन्द्रशेखर आज़ाद ने बीड़ा उठाया है।...कुंजकली। एक दिन सब मिट जाएगा।...हर आदमी को बराबर का ओहदा मिलेगा।...न कोई अमीर रहेगा और न कोई गरीब।...सब मेहनत करो और खाओ। न कोई अछूत और न कोई सवर्ण।"[11] कुंजकली अपनी ढोली जाति की स्त्री दशा को देखकर दुःखी हो जाती है। सामंती व्यवस्था के प्रति विद्रोह की चिंगारी एक दलित स्त्री के मन में जलाना लेखक का सशक्त चेतनायुक्त प्रयास कहा जा सकता है। कुंजकली देवोदास की बातों का स्मरण करके बगावत करने के लिए आतुर हो उठती है। देवोदास बाबा कहता था–"ये ठाकुर और राजाओं की व्यवस्था है, सभ्यता है, रीति–रिवाज है जिसमें चंद मुट्ठी भर लोग तमाम दबे हुए लोगों का शोषण करते हैं, उन्हें जानवर की तरह रखते हैं। इसलिए इन राजाओं और फिरंगियों के राज्य को खत्म करना पड़ेगा। एक ऐसी लड़ाई लड़नी होगी जो सबको एक–सा जीवन दे।"[12] कुंजकली जनसमाज द्वारा राजा ठाकुरों को ईश्वर मान लिए जाने पर विचार करती है और सोचती है–"यह सब कैसे हो सकता है ? राजा ठाकुरों को कैसे मिटाया जा सकता है? लोग कहते हैं कि ये तो ईसर हैं...उन्हीं के बेटे–पोते हैं... और बाबा कहता हैकृयह व्यवस्था है, एक गलत व्यवस्था। इस व्यवस्था को मिटाना होगा, उसके लिए एक आंदोलन...एक क्रांति।"[13]

महल में समय बीतने के साथ ही कुंजकली का मन भरने लगा था। ऐसे में एक दिन अचानक देवोदास बाबा सूदखोर बनिये किरपाचन्द की हत्या करके कुंजकली से मिलने आता है। कुंजकली कुछ रुपये और गहने लाकर बाबा को दे देती है और बाबा अपने रास्ते चला जाता है। राजा फतहसिंह और माइकेल को उस क्रांतिकारी की तलाश करते हुए यह पता चलता है कि वो कुंजकली से मिलने आया था। कुंजकली के द्वारा कुछ भी बताने से इंकार करने पर फतहसिंह के द्वारा किये गये अत्याचार का लेखक ने यथार्थ वर्णन किया है–"सिपाहियों ने ढोलियों के बास में आतंक फैला दिया। एक–एक घर में घुसकर वे देवीप्रसाद यानी बाबा देवोदास को ढूँढ़ने लगे। उनके भांड़े–बरतन बाहर फेंक दिए। अमूमन ढोलियों के घरों में मिट्टी के बरतन थे, वे टूटकर बिखर गए। ठीकरियाँ चारों ओर खिंच गई। उनकी ढोलकियाँ सड़क पर पड़ी थीं। सुन्दर जवान ढोलनों को राजा के आदमियों ने धर दबोचा। उनकी इज्जत लूट ली। चारों ओर आतंक फैल गया। किसी की हिम्मत नहीं कि मुँह से विरोध का बोल निकाल ले। सन्नाटे से घिरा आतंक बड़ा ही भयावह होता है। संत्रस्त और दुखी ढोली–ढोलनें अपने पर हो रहे जुल्म के कारण केवल आँसू बहा रहे थे।"[14] प्रायः वर्चस्वशाली व्यक्ति निर्बल पर अत्याचार करके अपने बल का डंका बजाता रहा है। ढोली जाति के साथ भी यही हुआ। इसलिए उनकी चुप्पी आतंक में जीने का कारण बन गई थी।

जातिवादी सामंती व्यवस्था के द्वारा दलितों को समाज से किनारे धकेलकर, आर्थिक रूप से विवश करके मरे पशुओं का मांस खाने एवं मल उठाने पर मजबूर किया गया। यहाँ तक कि धर्म की आड़ में नामकरण संस्कार के बहाने उनके नाम भी अपमानजनक रखे गये। अपनी घृणा को व्यक्त करने के लिए वे दलितों को अपमानजनक सम्बोधन से सम्बोधित करते थे। "कानी नाइन का क्या नाम है मालूम नहीं, पर लोग उसे 'काणकी' कहते थे। शायद यह नाइन के विरुद्ध बड़े लोगों की घृणा हो... चिढ़ा हो। छोटी जात को कुछ भी नाम दिया जा सकता है।"[15] देवोदास दलित वर्ग के अपमानजनक नाम रखे जाने का विरोध करता है। वह इस नीति को गलत मानता है। जातिवादी शोषणकत्ताओं की पोल खोलते हुए देवोदास का कहना है–"सच तो यह है कि इन राजा–ठाकुरों और फिरंगियों के नाम भद्दे होने चाहिए जो गरीब जनता पर अत्याचार और अन्याय करते हैं। जैसे एक ठाकुर का नाम था

दयालसिंह और काम करता थाकृगरीब किसानों के खेतों को जलाना।... दूसरा एक जमींदार था। उसका नाम था रामसिंह और करता क्या था, बताऊँ? हर सीता की इज्ज़त लूटता था।"[16] जन्म से ही व्यक्ति की नियति निर्धारित हो जाती है। उसे जाति व्यवस्था की रणनीति से जूझना पड़ता है। व्यवस्था से निकलने के मार्ग अवरूद्ध कर दिये जाते हैं। इसीलिए अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था को 'बहुमंजिला इमारत' कहा। 'जिसके खिड़की दरवाजे सब बन्द होते हैं। बाहर निकलने के सभी मार्ग बन्द होने पर व्यक्ति जहाँ जन्म ले लेता उसे वहीं मरना होता है।' आर्थिक निर्बलता के कारण ढोली जाति के लोग विद्रोह करने में विवश होते हैं इसलिए सवर्ण मानसिकता वालों द्वारा जाति व्यवस्था के आधार पर उनका शोषण आम बात हो जाती है। डॉ. अम्बेडकर ने जाति व्यवस्था पर कहा–"चाहे आप किसी भी दिशा में देखें, जाति एक ऐसा दैत्य है, जो आपके मार्ग में खड़ा है। आप जब तक इस दैत्य को नहीं मारोगे, आप न कोई राजनीतिक सुधार कर सकते हैं और न कोई आर्थिक सुधार।"[17]

निष्कर्षतः देखा जाय तो उपन्यास की मूल संवेदना दलितों के शोषण और अपमान की है। जाति व्यवस्था के कारण दलित वर्ग प्रायः अवमानना का शिकार रहा है। अवमानना से मुक्ति के लिए जाति व्यवस्था के उन्मूलन की आवश्यकता है, और यह तभी संभव होगा जब दलित अपने मध्य व्याप्त सामंतवाद, पितृसत्तात्मक व्यवस्था एवं जाति व्यवस्था को अच्छे से जानने समझने लगेंगे।

संदर्भ–

1. चन्द्र, यादवेन्द्र शर्मा. (2011) 'ढोलन कुंजकली', यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र मेमोरियल ट्रस्ट, बीकानेर, द्वितीय संस्करण, पृ. 4
2. वही, पृ. 81
3. वही, पृ. 5
4. वही, पृ. 5
5. वही, पृ. 15
6. वही, पृ. 22
7. वही, पृ. 24
8. वही, पृ. 29
9. वही, पृ. 34
10. वही, पृ. 34
11. वही, पृ. 71
12. वही, पृ. 78
13. वही, पृ. 78
14. वही, पृ. 124–125
15. वही, पृ. 55
16. वही, पृ. 69
17. डॉ. अम्बेडकर, (1998) संपूर्ण वाङ्मय खंड–1, कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, पृ. 66